# हिन्दी विभाग, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान
# उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) सरदारशहर, चूरू, राजस्थान

## विस्तार व्याख्यान
## विषय : देवनागरी लिपि एवं हिन्दी भाषा : भविष्य की आशा
## प्रतिवेदन

दिनांक : 10.01.2022

दिनांक 10.01.2022 सोमवार, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) सरदारशहर, चूरू के मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय के हिन्दी विभाग द्वारा 'देवनागरी लिपि एवं हिन्दी भाषा : भविष्य की आशा' विषय पर विस्तार व्याख्यान आयोजित किया गया। 10 जनवरी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी दिवस के विशेष अवसर के संदर्भ में विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा के क्षेत्र में भविष्योन्मुखी दृष्टि का परिचय देने हेतु यह आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ पितृ संस्था गांधी विद्या मंदिर की प्रार्थना से किया गया। तत्पश्चात विभाग की अध्यक्षा डॉ. कल्पना मौर्य ने स्वागत वक्तव्य देते हुए अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी की स्थिति का परिचय दिया। उन्होंने कहा कि विदेशों में हिन्दी भाषियों एवं हिंदी की स्थिति पर विचार करते समय पहले हम उन देशों की स्थिति को देखेंगे जहां हिंदुस्तानी लोग 19वीं सदी के उत्तरार्ध एवं 20वीं सदी के प्रारम्भ में बंधुआ मज़दूर की भांति ले जाये गये थे। फ़ीजी में 37 प्रतिशत हिंदुस्तानी हैं, जो किसी न किसी प्रकार की हिंदी बोलते हैं वहां साउथ पैसिफ़िक विश्वविद्यालय में हिंदी विषय भी पढ़ाया जाता है वहाँ फ़िजिअन, एवं इंग्लिश के अतिरिक्त हिन्दुस्तानी भी राजभाषा है। फ़ीजी में हुए फ़ौजी विद्रोह के समय लगभग 30,000 हिन्दुस्तानी मूल के फ़िजियन्स, न्यूज़ीलैंड, आस्ट्रेलिया, टोंगा और कनाडा जाकर बस गये थे और वे अब वहाँ पर हिंदी की अलख जगा रहे हैं। मौरिशस में 68 प्रतिशत इंडो–मौरिशियन्स हैं, जो फ्रेन्च अथवा इंग्लिश के साथ हिन्दुस्तानी भाषा बोलते हैं। वहाँ विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना के पश्चात हिंदी के प्रसार का कार्य और प्रगति पर है। सूरिनाम की तीन राजभाषाओं में हिंदी भी है। डच, क्रिओल, और सरनामी (मुख्यतः हिंदी). यद्यपि त्रिनिदाद–टोबैगो में हिंदी बोलने वाले कम ही रह गये हैं, परंतु त्रिनिदाद की भाषा में बहुत से हिंदी के शब्द सम्मिलित हो गये हैं। गुयाना में 43 प्रतिशत इन्डो–गुयानीज़ हैं। अमीरात एवं दक्षिण अफ्रिका में हिंदी बोलने वालों की अच्छी संख्या है और बढ़ रही है। विकसित देशों में प्रारम्भ में जो भारतीय गये, वे अधिकांश वहीं के रंग में रंग गये, परंतु भारत की आर्थिक एवं सामरिक उन्नति तथा अनेक संस्थाओं के प्रयत्न से उनकी द्वितीय एवं तृतीय पीढियों में भारत एवं हिंदी के प्रति अभिरुचि उत्पन्न हुई है। इस कार्य में राष्टँभाषा प्रचार समिति, भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद, विश्व हिंदी समिति, विश्व हिंदी सम्मेलन, अन्तरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन गीतांजलि बहुभाषीय समुदाय, (बर्मिंघम), जैसी संस्थाओं का योगदान अनुकरणीय है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. देवेन्द्र मोहन ने विज्ञान के क्षेत्र में हिन्दी की स्थिति और भविष्य पर चर्चा की। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि कृषि विज्ञान और पशुचिकित्सा जैसे विषयों को हिंदी में पढाने से भी उसका सीधा फायदा पाठकों को होगा क्योंकि यह दोनों विषय देश की मिट्टी से जुड़े हैं। कृषि विज्ञान को हिंदी में पढाये जाने से देश की कृषि व्यवस्था को इसका लाभ ही होगा। जिसकी पूस्तकें भी हिंदी में उपलब्ध है। कंप्यूटर की पढाई में सी–प्रोग्रामिंग, इलेक्ट्रॉनिक्स और शॉप प्रक्टिस, सर्किट एनॅलीसिस, इलेक्ट्रॉनिक्स मेजरमेंट एण्ड

इन्स्ट्रुमेंटेशन, इलेक्ट्रॉनिक डिवाईसेस एवं सर्किटस्, डिजीटल इलेक्ट्रॉनिक्स, वेब प्रोपोगेशन एवं कम्यूनिकेशन इंजिनियरिंग, इलेक्ट्रॉनिक्स इन्स्ट्रुमेंटेशन, आदि तकनीकी विषयों का समावेश है। भारत सरकार के केंद्रीय विश्वविद्यालय जैसे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा और अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय, भोपाल ने ऐसे कुछ पाठ्यक्रमों को हिंदी में पढाने का शुभारंभ भी किया है, जिसमें प्रबंधन, इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, कम्प्यूटर साइंस, हिंदी, अंग्रेज़ी, संस्कृत, मनोविज्ञान, मीडिया, फिल्म अध्ययन, भौतिकी, गणित, सूचना–प्रौद्योगिकी एवं भाषा–अभियांत्रिकी आदि विषय सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त भाषा संबंधी कुछ पाठ्यक्रमों का भी समावेश है, जैसें पी–एच.डी. स्पेनिश, एम.फिल. (कंम्प्यूटेशनल लिंग्विस्टिक्स), एम.फिल (कंप्यूटेशनल भाषाविज्ञान), अनुषंगी अनुशासन, अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, कंप्यूटर साइंस, इनफॉरर्मेशन टेक्नोलॉजी, भौतिक विज्ञान, गणित का भी समावेश हैं। इनसे कई रोजगार के अवसर भी उपलब्ध होते हैं।

रजिस्ट्रार डॉ. पी. के पाण्ड्या ने अपने वक्तव्य में शिक्षा के क्षेत्र में हिन्दी की स्थिति पर चर्चा करते हुए कहा कि प्रायः समझा जाता है कि, विज्ञान और तकनीकी की पढाई केवल अंग्रेजी में ही संभव है। ऐसी धारणा होना स्वाभाविक भी है क्योंकि हमारी शिक्षा प्रणाली में यही पढाया जाता है कि विज्ञान की पढाई केवल अंग्रेजी में ही हो सकती है। विज्ञान और हिंदी के सभी विद्वान यही बताते हुए पाए जाते हैं कि विज्ञान की परिभाषा केवल अंग्रेजी में ही करना संभव है। बड़े–बड़े पुरस्कार प्राप्त हिंदी के विद्वान हिंदी का महिमा मंडन करते नहीं थकते, लेकिन जब उनके अपने बच्चों को स्कूल में दाखिला देने का समय आता है, तो वे अंग्रेजी के स्कूलों को ही प्रधानता देते हैं। दूसरी तरफ विज्ञान के विद्वान जब भी विज्ञान की बात करेंगे तो उनके जुबान से अंग्रेजी ही हावी रहेगी। एक और तर्क दिया जाता है कि विज्ञान का उद्‌गम ही पश्चिम की अंग्रेजी भाषा में हुआ है, इसलिए उसे विज्ञान केवल अंग्रेजी में ही पढना और पढाना उचित है। इसमें विज्ञान विषय की पर्याप्त मात्रा में सामग्री न होने का भी कुतर्क दिया जाता है। परंतु हिंदी के कई लेखक हैं जो विज्ञान के विभिन्न विषयों पर लिखते हैं। प्रायः देखा गया है कि सरकारी कार्यालयों में भर्ती होने वाले अधिकतर लोग अपने तकनीकी और विज्ञान के विषयों को अंग्रेजी में पढ़कर आते है, इसलिए उन्हें अपना कार्य हिंदी में करने में कठिनाई जाती है, जिसके लिए ऐसे कर्मचारियों के लिए अलग से प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाना पड़ता है, जो सिर्फ हिंदी में कार्यालयीन कार्य में प्रवीण बनाने के लिए होता है।

भारत के कुछ राज्यों में विज्ञान विषयों को हिंदी में पढ़ने और पढ़ाने से अच्छे परिणाम सामने आने लगे हैं। अधिकतर स्पर्धा परीक्षाओं में अव्वल आने वाले विद्यार्थी हिंदी माध्यमों से अच्छे अंक प्राप्त करते दिखाई दे रहे हैं। खासकर जटिल विषयों को अपनी भाषा में पढने से विषय को समझने में आसानी होती है।

स्कूल के विज्ञान के साथ–साथ माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, महाविद्यालयीन, स्नातक और स्नातकोत्तर के विज्ञान और तकनीकि संबंधी विषयों की पुस्तकें हिंदी में भी उपलब्ध है, जिसकी जानकारी अधिकतर लोगों को नहीं है। जैसे विज्ञान की सभी शाखाओं, तकनीकी, अभियांत्रिकी, पॉलिटेक्नीक, आइटीआइ, सीए, सीएस, सीएमए, कंप्यूटर, आयकर, स्पर्धा परिक्षाओं की तैयारी से संबंधित पुस्तकें, धर्म, विधिशास्त्र, मेडिकल, नर्सिंग, औषध निर्माण (फार्मसी), बी फार्मसी की पुस्तकें भी हिंदी में उपलब्ध हैं। राजस्थान, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा आदि राज्यों में विज्ञान विषयों का हिंदी में आसानी से पढाया और समझाया जा सकता है। इससे स्पर्धा परीक्षा और अन्य परीक्षाओं में भी अव्वल स्थान प्राप्त किया जा सकता है। एम एस सी आईटी जैसे कंप्यूटर कोर्सेस में यदि भाषा संबंधी एक अध्याय जोड़ दिया जाए तो कंप्यूटर में प्रशिक्षण प्राप्त करते समय ही हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में कंप्यूटर पर कार्य करने का प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता डॉ. अविनाश पारीक ने पितृ संस्था गांधी विद्या मंदिर एवं मानित विश्वविद्यालय का परिचय दिया।

विस्तार व्याख्यान में मुबंई विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र के जे. एस. एम. महाविद्यालय, अलीबाग मुंबई के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष एवं शोधनिर्देशक कैप्टन डॉ. मोहसिन अली खान मुख्य वक्ता के रूप में ऑनलाईन पटल पर उपस्थित रहे। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में देवनागरी लिपि में हिन्दी को भारत की आधिकारिक भाषा घोषित किया गया था। देवनागरी लिपि संभवतः विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि है। यह जैसी लिखी जाती है, वैसी ही पढ़ी जाती है। इसमें अंग्रेजी के GO और TO तथा PUT और BUT जैसा उच्चारण–वैषम्य नहीं हैं। भाषा विचारों के आदान प्रदान का सशक्त माध्यम है। यद्यपि सम्पूर्ण जीव मात्र अपनी बात अपने समजीवी तक किसी न किसी रूप मे पहुचाते हैं किंतु उस जीव मात्र के बीच उस समय का संवाद उन दोनो के बीच सिर्फ उसी समय तक रहता है । उसको लिपिबद्ध नही किया जा सकता है। जीवमात्र मे मनुष्य सर्वश्रेष्ठ है। अतः उसने अपने विचारों के आदान प्रदान हेतु भाषा को चुना। उसे लिपिबद्ध किया जिससे उन विचारों को जीवित रखा जा सके अर्थात आवश्यकता पड़ने पर उनको पढ़ा जा सके। भाषा का प्रादुर्भाव और विकास मनुष्य के विकास के साथ साथ आगे बढ़ा। हमारे देश मे यमन, हूंण, मुगल और अंग्रेज आये, साथ ही अपनी संस्कृतियों को भी साथ लाये। इसलिए प्राकृत भाषा मे अरबी, फारसी, उर्दू, अंग्रेजी आदि भाषाओं के शब्दों का समावेश हो गया। जिस समय अंग्रेज भारत छोड़ कर जा रहे थे अर्थात जब हम आजाद हुए, उस समय हमारे देश मे सरकारी काम काज की भाषा अंग्रेजी थी। अतः हमारे देश के सम्मुख सब से बड़ी समस्या थी कि हमारे सरकारी कामकाज की भाषा देश की आजादी के बाद क्या हो। इसके लिए एक सर्वेक्षण हुआ। इस सर्वेक्षण से यह बात सामने

उभर कर आई कि देश के सर्वाधिक भू–भाग मे, सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा हिंदी है। अतः संविधान की धारा 343 के अंतर्गत देवनागरी लिपि मे लिखी हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया। भाषा विज्ञान के अनुसार हिंदी एक पूर्ण भाषा है। हिंदी की देवनागरी लिपि पूर्णतः वैज्ञानिक है। हिंदी भाषा मे जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है जिसके कारण संवाद और उसके लेखन मे त्रुटियाँ न के बराबर होती हैं। अगर हम अंग्रेजी भाषा की व्याकरण और उसकी शब्द रचना से हिंदी भाषा की तुलना करें, तो हम हिंदी को अंग्रेजी भाषा से कहीं ज्यादा सशक्त पाते हैं। अंग्रेजी के 26 स्वर और व्यंजनों की तुलना में हिंदी भाषा में स्वर और व्यंजनों की संख्या 46 है। कहने का अर्थ है कि अंग्रेजी भाषा से हिंदी भाषा मे व्यापकता अधिक है। यह तो भाषा विज्ञान की बात है किंतु यदि हम व्यावहारिक दृष्टिकोंण से देखें तो भारतवर्ष मे हिंदी बोलने वालों की संख्या अंग्रेजी बोलने वालों की अपेक्षा बहुत अधिक है । अतः हम इसे संपर्क भाषा की संज्ञा देते हैं। जिस भाषा मे हम अधिकतम लोगों से सम्पर्क कर सकते हैं वही भाषा सम्पर्क भाषा कहलाने की हकदार है। अतः हिंदी हमारी राजभाषा के साथ–साथ सम्पर्क भाषा भी है। देश के किसी भी कोने मे किसी न किसी रूपमे आज हिंदी बोलने या समझने वाले लोग हैं। हिंदी राजभाषा के साथ साथ सम्पर्क भाषा के रूप मे अपनी सार्थकता सिद्ध करती है। स्वतंत्रता की अलख जगाने से लेकर देश की आजादी मे हिंदी का योग्दान रहा है। अनेक कवियों एवं लेखकों ने हिंदी भाषा के माध्यम से देश प्रेमियों का मार्ग प्रशस्त किया है। तभी तो हिंदी को हिंदुस्तान का पर्याय माना गया है । "हिंदी हैं हम वतन हैं हिंदोस्तां हमारा" स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने कहा था– " राष्ट्र के रूप मे हिंदी हमारे देश की एकता मे सब से अधिक सहायक है।" उनका कहा हुआ कथन आज चरित्रार्थ हो रहा है । सभी को अपनी अपनी भाषा प्रिय लगती है । जिस भाषा को बच्चा अपनी मां से सीखता है,उसके प्रति उसका लगाव स्वाभाविक है। किंतु जब हम बड़े होकर देश के लोगों से संवाद करते हैं, अपने घर परिवार से निकल कर देशवासियों की कतार मे खड़े होते हैं , जब हम अंतराष्ट्रीय बिरादरी मे जाते हैं, तब हमें अपनी राजभाषा का ज्ञान होना जरूरी है । आज का युग कम्प्यूटर का युग है, सूचना तकनीक का युग है । इस क्षेत्र मे भी हिंदी किसी से पीछे नहीं है । कम्प्यूटर पर हिंदी सम्बंधित नित नये प्रयोग हो रहे हैं । इसे कैसे सरल और सुलभ बनाया जाये, इस पर विचार किया जा रहा है । अन्य भाषाओं से हिंदी मे अनुवाद सम्बंधी समस्या भी कम्प्यूटर पर सुलझ गई है । फोंट आदि की समस्या के निदान हेतु यूनी कोड लाया गया है । अब हम हिंदी मे ई–मेल आसानी से भेज सकते हैं । कहने का अर्थ है कि अब हम कम्प्यूटर पर हिंदी मे आसानी से कार्य कर सकते हैं । इसके अतिरिक्त टी.वी. चौनलों से प्रसारित कार्यक्रमों से भी हिंदी की लोकप्रियता बढ़ी है।इसका अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि जिन सेटेलाइट चैनलों ने भारत में अपने कार्यक्रमों का आरम्भ केवल अंग्रेजी भाषा से किया था; उन्हें अपनी भाषा नीति में परिवर्तन करना पड़ा है। अब स्टार प्लस, जी.टी.वी., जी न्यूज, स्टार न्यूज, डिस्कवरी, नेशनल ज्योग्राफिक आदि टी.

वी.चैनल अपने कार्यक्रम हिन्दी में दे रहे हैं । आप भारत के किसी भी कोने मे चले जाइये , किसी भी दफ्तर मे जाये, सभी जगह हिंदी मे कामकाज करने वाले मिल जायेंगे। यहां तक कि वित्तीय लेनदेन जैसी संस्थाओ मे भी अब हिंदी मे कामकाज होने लगा है । भारत सरकार की सभी परीक्षाओं मे हिंदी माध्यम से परीक्षा दी जा सकती है। भाषा के रूप मे अब किसी तरह का बंधन नहीं है । राजभाषा के कार्यांवयन व विकास हेतु राजभाषा अधिनियम 1963 व राजभाषा नियम 1976 बनाये गये। राजभाषा के कार्यान्वयन पर नजर रखने हेतु राजभाषा संसदीय समिति का गठन हुआ जिसकी अध्यक्षता भारत सरकार का तत्कालीन गृह मंत्री करता है । इस तरह से संवैधानिक रूप से भी हिंदी के विकास की दिशा निर्धारित है। आज हमारे देश की जनसंख्या लगभग सवा सौ करोड़ है जो दुनियां के सभी देशों से ज्यादा है । अतः हमारा देश विश्व व्यापार का एक बहुत बड़ा केंद्र है। सारे विकसित देश चीन, जापान, अमेरिका आदि सभी हमारे साथ व्यापार बढ़ाना चाहते हैं। व्यापार मे संवाद बहुत ही आवश्यक है। अतः दूसरे देशों के लोग भी हिंदी सीखने मे उत्सुकता दिखाने लगे हैं। एक सर्वे के अनुसार विदेशों मे हिंदी के प्रति बढ़ती रुचि को देखते हुए जगह जगह हिंदी लर्निंग सेंटर खुल रहे हैं । दिल्ली यूनिवर्सिटी के महाविद्यालयों मे हिंदी के प्रति विदेशी छात्र– छात्राओं की रुचि बढ़ी है । हमसे अच्छे संबंध बनाने के लिए हिंदी सीखना कितना जरूरी है, इसका जीता जगता उदाहरण है कि अमरीकी राष्ट्रपति जॉर्ज बुश ने एक विशेष राशि अमरीका में हिंदी, चीनी और अरबी भाषाएं सीखाने के लिए स्वीकृत की है। इससे स्पष्ट होता है कि हिंदी के महत्व को विश्व में कितनी गंभीरता से अनुभव किया जा रहा है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व मे हिंदी सीखने वालों की संख्या बढ़ी है। विश्व में हिंदी की स्थिति पर चर्चा करते हुए यह जान लेना भी आवश्यक है कि प्रयोक्ताओं की संख्या के आधार पर 1952 में हिंदी विश्व में पांचवे स्थान पर थी। 1980 के आसपास वह चीनी और अंग्रेजी के़ बाद तीसरे स्थान पर आ गई । 1991 की जनगणना में हिंदी को मातृभाषा घोषित करने वालों की संख्या के आधार पर पाया गया कि यह पूरे विश्व में अंग्रेजी भाषियों की संख्या से अधिक है। इतना ही नहीं, विश्व में हिंदी प्रयोग करने वालों की संख्या चीनी से भी अधिक है और हिंदी अब प्रथम स्थान पर है। उसने विश्व की अंग्रेज़ी समेत अन्य सभी भाषाओं को पीछे छोड़ दिया है. आज भारत में सर्वाधिक पत्र–पत्रिकाएं तथा उनके पाठक हिंदी में हैं। जन सम्पर्क के साथ साथ यदि हम जन संचार पर पर नजर डालें तो तो इसमे टीवी चौनलों एवं फिल्म जगत का योगदान सराहनीय है। एक सर्वेक्षण के अनुसार हिंदी भाषा मे बनने वाली फिल्मों की संख्या अन्य भाषाओं मे बनने वाली फिल्मों की संख्या से बहुत अधिक है । यही नहीं, हिंदी फिल्मों के गीत लोगों की जुबान पर रहते हैं। हिंदी गीतों की गुंगुनाहट काश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक फैली है। इस तरह से सिनेमास्कोप ने हिंदी के प्रचार प्रसार मे महती भूमिका निभाई है । जन संचार का इस तरह से जनसम्पर्क मे आना हिंदी के सशक्तीकरण को दर्शाता है। आज हिंदी लिखने बोलने वालों को हेय दृष्टि से नही देखा जाता है। हिंदी का ज्ञान होना अब सम्मान

जनक है। सभी क्षेत्रों मे हिंदी ने विकास किया है। मै इस जगह एक बात कहना आवश्यक समझता हूँ कि आज हिंदी के बारे मे एक बात निश्चित तौर पर तय है कि वह दुरूह व क्लिष्ट न होकर सरल और सुबोध है। आज की हिंदी वह हिंदी है जिसने अपने आप मे अंग्रेजी, उर्दू आदि भाषाओं के शब्दों को समाहित कर लिया है । उसमे सामंजस्य की सामर्थता है। अब वह अन्य भाषाओं से कटी कटी–सी नहीं रहती है बल्कि उनके साथ सामंजस्य स्थापित करने को तैयार है। वह दिन दूर नही है जब न केवल भारत बल्कि सारे विश्व मे जन सम्पर्क की भाषा हिंदी होगी। अंत में मैं स्वतंत्र भारत के शिल्पी सरदार वल्लभभाई पटेल के कथन को दुहराना चाहता हूँ। जिसमे उन्होंनें कहा था– "हिंदी हमारी राजभाषा है, उसका अध्ययन करने में हमें गर्व का अनुभव होना चाहिए।" आइये हम सब मिल कर हिंदी को समृद्ध बनायें और अपना कार्यालयी काम काज हिंदी मे करें।

राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया। कार्यक्रम में 49 प्रतिभागियों ने ऑनलाईन माध्यम से तथा प्रोजेक्ट प्रदर्शनी के माध्यम से 50 विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की। संचालन विभाग की सह आचार्य डॉ. विदुषी आमेटा ने किया।

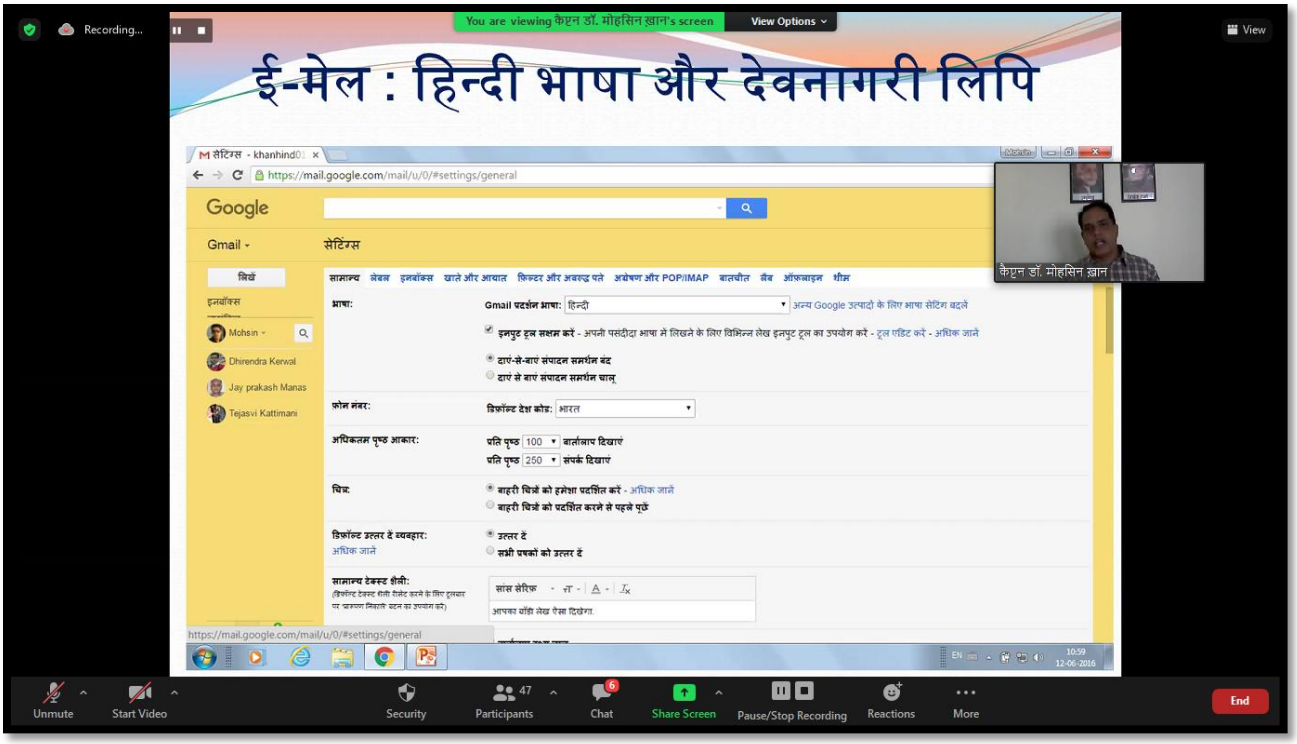
Recording...
You are viewing कैप्टन डॉ. मोहसिन ख़ान's screen
View Options
View
ई-मेल : हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि
https://mail.google.com/mail/u/0/#settings/general
Google
Gmail
सेटिंग्स
कैप्टन डॉ. मोहसिन ख़ान
Unmute
Start Video
Security
Participants
47
Chat
Share Screen
Pause/Stop Recording
Reactions
More
End

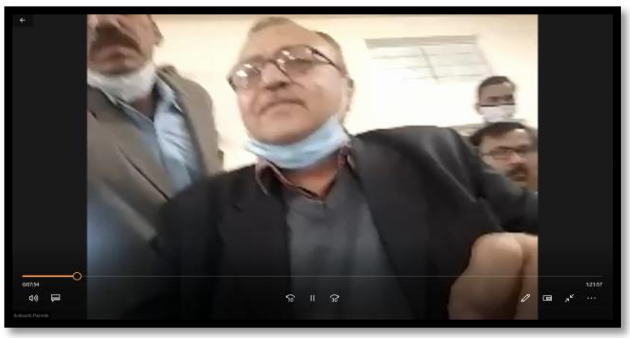

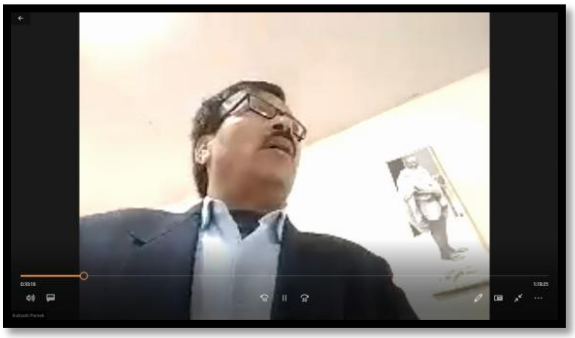

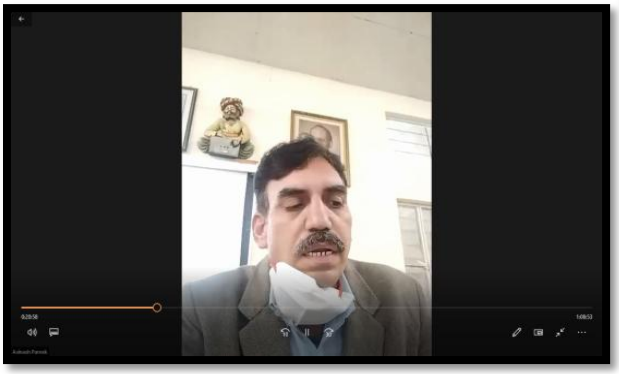

Recording...
You are viewing कैप्टन डॉ. मोहसिन ख़ान's screen
View Options
View
मीडिया : देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा
हिंदी में स्टार न्यूज पर बजट भाषण
ARTH
सौभाग्य
मिथिला
न्यूज़ 24
सहारा समय
समाचार PLUS राजस्थान
रामायण
जब वी मेट JAB WE MET
दूरदर्शन
'आजतक' के शानदार 10 साल
आज तक
सरस्वतीचन्द्र
कैप्टन डॉ. मोहसिन ख़ान
Unmute
Start Video
Security
Participants
Chat
Share Screen
Pause/Stop Recording
Reactions
More
End




Recording...
You are viewing कैप्टन डॉ. मोहसिन ख़ान's screen
View Options
View
उपलब्धियाँ, चुनौतियाँ और सीमाएँ
हिन्दी पढ़ें, चुस्त-दुरुस्त रहेगा दिमाग
अध्ययन से हुआ खुलासा, सक्रिय हो जाते हैं मस्तिष्क के दोनों हिस्से
ऐसे मिले नतीजे
विदेशी भाषाओं में है बेरोज़गारी की हमारी समस्या का एक स
बड़ी बात : इलाहाबाद हाई कोर्ट ने हिंदी के लिए हिंदी में दिया आदेश
प्रेम चन्द अग्रवाल
@hindisamarthak
@rashtrapatibhvn भारत देश के राष्ट्राध्यक्ष के आधिकारिक (ऑफिशियल) ट्विटर से जब केवल अंग्रेजी में ट्वीट किया जाता है तो उसे संविधान की सर्वोच्च सत्ता के कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों का राजभाषा के अधिनियमों का उलंघन क्यों न माना जाए।
@HMOIndia
हिन्दुस्तान
यह कैसा सम्मान
कैप्टन डॉ. मोहसिन ख़ान
Participants (42)
Find a participant
Programme Director (Rese... (Host, me)
कैप्टन डॉ. मोहसिन ख़ान (Co-host)
कैप्टन डॉ. मोहसिन ख़ान (Co-host)
Akshay Patil
Android Bluedroid
Invite
Mute All
Unmute
Start Video
Security
Participants
Chat
Share Screen
Pause/Stop Recording
Reactions
More
End

राजस्थान

जागरूक टाइम्स

जयपुर, बुधवार, 12 जनवरी, 2022

# विश्व हिन्दी दिवस : अपनी भाषा के गौरव को अभिभूत करने का दिन : खान

जागरुक टाइम्स संवाददाता

**सादुलपुर।** हिन्दी विभाग, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मानित विश्वविद्यालय, सरदारशहर द्वारा विश्व हिन्दी दिवस पर ऑनलाइन व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के संस्था गीत से प्रारंभ कार्यक्रम में विषय प्रवर्तन करते हुए हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. कल्पना मौर्य ने भाषिक विश्लेषण के आधार पर हिन्दी का महत्व बताया। इस अवसर पर मुबंई विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र के जे. एस. एम. महाविद्यालय अलीबाग के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष कैप्टन डॉ. मोहसिन अली खान ने देवनागरी लिपि एवं हिन्दी भाषा: भविष्य की आशा विषय पर व्याख्यान देते हुए बताया कि आज समस्त तकनीकी माध्यम हिन्दी प्रयोग को बढ़ावा दे रहे हैं। हिन्दी का प्रयोक्ता ई-मेल, सॉफ्टवेयर, ऑनलाईन बैंकिंग आदि विभिन्न स्तरों पर आज कार्य करने में सक्षम हैं। इसलिए हमें हिन्दी के सर्वत्र प्रयोग को व्यवहार में लाना होगा। डॉ. मोहसिन ने ई साधनों पर हिन्दी भाषा व देवनागरी लिपि के प्रयोग करने की पूर्ण प्रक्रिया से भी अवगत कराया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. देवेन्द्र मोहन ने विश्व हिन्दी दिवस मनाये जाने के इतिहास पर दृष्टिपात करते हुए हिन्दी की वर्तमान उन्नति व स्थिति पर विचार व्यक्त किये। विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार डॉ. प्रमोद कुमार पांडिया ने नई शिक्षा नीति-2020 में हिंदी भाषा को सर्वाधिक महत्वपूर्ण देने तथा हिन्दी भाषा को सहर्ष अधिकाधिक उपयोग करने पर बल दिया। संकाय के अधिष्ठाता डॉ. अविनाश पारीक ने संस्था का परिचय देते हुए बताया कि स्वामी रामशरण महाराज द्वारा संस्थापित यह संस्था प्रारंभ से ही भारतीय भाषाओं के प्रयोग और विकास हेतु सफल प्रयास कर रही है। कार्यक्रम का संचालन करते हुए हिन्दी विभाग की सह आचार्य डॉ. विदुषी आमेटा ने कहा कि भाषा हमारी सांस्कृतिक समृद्धि और विरासत की प्रतीक है। कार्यक्रम में भारत के विविध प्रांतों से सहभागी सम्मिलित हुए।

## सृजन सेवा संस्था साहित्य सम्मा

### चूरू के ओम प्रकाश तंवर

जागरुक टाइम्स सं

**चूरू।** सृजन सेवा संस्थान, श्रीगंगानगर क जाने वाले वार्षिक साहित्य सम्मान की घ संस्थान के सभी सम्मान बाल साहित्य पर के निर्णायक मंडल ने कुल आठ सम्मान चयन किया है। एक सम्मान दो साहित्य जायेगा। सृजन के अध्यक्ष डॉ. अरूण अध्यापक आनन्द मायासुत की ओर से रुपये का माया-मोहन आलोक राजस्था प्रख्यात साहित्यकार मधु आचार्य 'आषाव हजार रुपये का गोपीराम गोयल सृजन क चौधरी और हनुमानगढ़ के नरेश मेहन संयुक्त रूप से दिया जायेगा। इसी तरह रा इक्यावन सौ-इक्यावन सौ रुपये के दो सृजन सम्मान राजस्थानी के लिए चूरू के लिए मथुरा, (उ.प.) के अंजीव अंजु साहित्यकार सम्मान के लिए मुम्बई की कुसुम अग्रवाल को, साहित्यिक पत्रकारित भैरूलाल गर्ग तथा साहित्य आलोचना सृ डॉ. विकास दवे का चयन किया गया है। इक्यावन सौ रुपये की राशि के हैं। ये सभ स्थिति सामान्य होने पर श्रीगंगानगर में आ संस्थान के सचिव डॉ. कृष्णकुमार आषु मंडल में वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. मंगतबाद भण्डारी और डॉ.नवज्योत भनोत शामिल

## हिन्दी दिवस अपनी भाषा के गौरव को अविभूत करने का दिन

**सरदारशहर@पत्रिका** हिन्दी विभाग, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मानित विश्वविद्यालय की ओर से विश्व हिन्दी दिवस पर ऑनलाइन व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के संस्था गीत से प्रारंभ कार्यक्रम में विषय प्रवर्तन करते हुए हिन्दी विभागाध्यक्ष डा.कल्पना मौर्य ने हिन्दी का महत्व बताया। इस अवसर पर मुबंई विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र के जेएसएम महाविद्यालय अलीबाग के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष कैप्टन डा.मोहसिन अली खान ने बताया कि आज समस्त तकनीकी माध्यम हिन्दी प्रयोग को बढ़ावा दे रहे हैं। इसलिए हमें हिन्दी के सर्वत्र प्रयोग को व्यवहार में लाना होगा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. देवेन्द्र मोहन ने विश्व हिन्दी दिवस मनाये जाने के इतिहास पर दृष्टिपात करते हुए हिन्दी की वर्तमान उन्नति व स्थिति पर विचार व्यक्त किए। विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार डा.प्रमोद कुमार पांडिया ने नई शिक्षा नीति 2020 में हिंदी भाषा को सर्वाधिक महत्वपूर्ण देने तथा हिन्दी भाषा को सहर्ष अधिकाधिक उपयोग करने पर बल दिया । संकाय के अधिष्ठाता डा.अविनाश पारीक व हिन्दी विभाग की सह आचार्य डा.विदुषी आमेटा विचार व्यक्त किए।

## हिन्दी दिवस अपनी भाषा के गौरव को अविभूत करने का दिन

**सरदारशहर@पत्रिका** हिन्दी विभाग, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मानित विश्वविद्यालय की ओर से विश्व हिन्दी दिवस पर ऑनलाइन व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के संस्था गीत से प्रारंभ कार्यक्रम में विषय प्रवर्तन करते हुए हिन्दी विभागाध्यक्ष डा.कल्पना मौर्य ने हिन्दी का महत्व बताया। इस अवसर पर मुबंई विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र के जेएसएम महाविद्यालय अलीबाग के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष कैप्टन डा.मोहसिन अली खान ने बताया कि आज समस्त तकनीकी माध्यम हिन्दी प्रयोग को बढ़ावा दे रहे हैं। इसलिए हमें हिन्दी के सर्वत्र प्रयोग को व्यवहार में लाना होगा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. देवेन्द्र मोहन ने विश्व हिन्दी दिवस मनाये जाने के इतिहास पर दृष्टिपात करते हुए हिन्दी की वर्तमान उन्नति व स्थिति पर विचार व्यक्त किए। विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार डा.प्रमोद कुमार पांडिया ने नई शिक्षा नीति 2020 में हिंदी भाषा को सर्वाधिक महत्वपूर्ण देने तथा हिन्दी भाषा को सहर्ष अधिकाधिक उपयोग करने पर बल दिया । संकाय के अधिष्ठाता डा.अविनाश पारीक व हिन्दी विभाग की सह आचार्य डा.विदुषी आमेटा विचार व्यक्त किए।